

समझाये उन समस्याओं को जिन्हें हम .खुद नहीं समझ पाते। ये बातें तो इर.फानियों की महफिलों में ही बड़ी शान से हो सकती हैं, आलोचकों और समीक्षकों के बीच। मैं विनयशील होकर यही कहूँगा : “मेरे लिये सक्रिय रहना ही का.फी है।”

सुनिश्चित समय पर अतिथि कवि घर आये। पहचान, बातचीत, बच्चों की दुनिया में प्रवेश। पैरिस की जिन्दगी, हमारी पुरानी इमारत का इतिहास, देश के समाचार। कुछ ही समय बाद हमें ऐसा लगा, जैसे हम जानते हैं एक दूसरे को सालों से।

पहले मैंने बताया बिगड़ा हुआ चित्र। फिर और दूसरे बने हुए। वह भी जिस पर मैंने लिखा था, “हमें .खामोश रहना सीखना है...” देर तक वे चित्र देखते रहे बिना प्रश्न पूछे। अब तक तो मैं शान्त हो गया था, इच्छा थी कविता सुनने की। इन्होंने पेश की एक पोथी, जिसमें इन्होंने खुद लाल और काली स्याही से अपनी कविताएं लिखी थीं। देर तक हम कविता सुनते रहे। चित्रों ने भी सुख-शान्ति से साथ दिया। खाने के बाद, विदा लेने के पहले मैंने कुछ कविताएं लिख लीं। एक आखरी पंक्ति थी :

“एक दिन बच्चों की बे.खौफ हँसी होगी

बिल्कुल

बच्चों की बे.खौफ हँसी की तरह”

दूसरे दिन न जाने किस तरह, बड़ी सरलता से चित्र बन गया।

~~रक्षा~~

पैरिस, मई-जून 1980,